सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजयख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, मई-जून 2018

सच्चा पश्चाताप

(प्रेरितों के काम 3:19) – 'इसलिए पश्चात्ताप करो और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाए जाएं, जिससे कि प्रभु की उपस्थिति से सुख-चैन के दिन आंए।'

ऐसा पश्चाताप पवित्र आत्मा के कारण है। यह परमेश्वर के इच्छानुसार का आया दुख है जो नए जीवन की ओर ले चलता है। (कुरिन्थियों 7:10) 'क्योंकि परमेश्वर के इच्छानुसार जो दुख होता है ऐसा पश्चाताप उत्पन्न करता है जिसका परिणाम उद्धार है और जिस से पछताना नहीं पड़ता, परन्तु सांसारिक शोक तो मृत्यु उत्पन्न करता है।' इस पश्चात्ताप से क्या होगा? हमें वह ऐहसास दिलाता है कि हम पापी हैं और यह भी कि हम में से स्थायी रुप से बने रहने वाली कोई भलाई नहीं निकल सकती है। ज्यादातर मसीही महसूस करते है कि वे पापी है मगर आख़िरकार इतने बुरे पापी तो नहीं है। यह पश्चाताप नहीं है। पतरस लोगों

सच्चा पश्चाताप... पृष्ठ 3 पर

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती

TV - Star Utsav

चैनल पर

हर रविवारसुबह 7:30 से 8:00 बजे

यीशु : उनकी अच्छाई और सुन्दरता

'आह! उसकी कैसी सुन्दरता, और कैसी शौभा होगी! (ज्रकर्याह 9:17)

प्राकृतिक सौंदर्य के कुछ अविश्वासनीय मनोरम दृश्यों को मैं ने देखा है। मगर दुनिया के अतिसुन्दर दृश्य भी आपको निरंतर मंत्रमुग्ध तो नहीं कर सकते।

यूरोप में जब सर्दियों में हिमपात होता है, तब जंगल और उसके खाली मैदान, पहाड़ी पक्षों और घास के मैदान सारे मानो बर्फ का एक स्वच्छ सफेद नकाब ओढे हों। मगर वही समय है जब सर्दी जुकाम और खांसी लोगों को सताती है। और आदमी उस सुन्दर बर्फ से भी ऊब जाते हैं और बसंत तथा गर्मी की राह देखते है।

मगर एक चीज है जिससे आप कभी नहीं उबोगे - यीशु का प्रेम। जिसने ने यीशु के प्रेम को चखा है उसे ऐसा लगाता है कि वह प्रेम दिन प्रति दिन अत्यंत अमूल्य और संतोषजनक होता जा रहा है।

'आह! उसकी कैसी सुन्दरता और कैसी शोभी होगी!' जो अच्छा है सिर्फ वही फीका ना पड़ने वाला सौंदर्य हो सकता है।

प्राचीन यूनानी (ग्रीक) अपनी देवियों का मोहक शारीरिक सुंदरता से निवेशित चित्रांकित करते थे। मगर उनको यह कभी नहीं सूझा कि उनके देवता पवित्रता के बिना वास्तव में सुन्दर, कभी नहीं बन पायेंगे।

बारम्बार जब भी कवियों ने अपनी दिमागी काल्पनिक कृतियों को देवता कहने की कोशिश की है, मुख्यतः शक्तिशाली होने की विशेषता के बारे में ही उन्होंने सोचा है। मगर अत्यंत आवश्यक विशेषता जो पवित्रता है उसके बारे में उनके अधम मानवीय कल्पना से, वे कभी नहीं सोच पाये है। अलबत्ता उनको यह मालूम होना चाहिए था कि पवित्रता रहित देवता, देवता ही नहीं है।

केवल यीशु के नीचे भेजे जाने पर ही आदमी, परमेश्वर की पवित्रता को थोड़ा सा समझ पाया है।

आदमी और औरतें बुढ़ापे से डरते है। शारीरिक सुन्दरता खो जाने के डर से शोकित हैं। कुछ लोग मूर्ति के जैसे शरीर आयाम पाकर सर्वांगसुन्दर हो सकते है। मगर वह सुन्दरता कितनी देर तक रहने वाली है!

जब यीशु आपके जीवन में आकर, आपके भारी बोझ को हटाकर, आपके आँसू पोंछते है तब आपके जीवन से एक अनोखी सुंदरता चमकती है। यह बाह्य सौंदर्य नहीं, मगर यह दूसरों तक फैलकर प्रभावित करने वाली सुन्दरता है। अपनी यात्राओं के दौरान, कई सुन्दर लोगों से मेरी भेंट हुई है जो महान पवित्रता, धीरज और अनुग्रह से भरे आदमी और औरतें है।

मसीह द्वारा दिया गया सौंदर्य

सालों बीतने के साथ-साथ और बढ़ता है। परमेश्वर का भय मानने वाली एक स्त्री जिसके पीछे सही तरह से बिताई गई जवानी हो, वह अपनी बुढापे में भी ख़ूबसूरत लगती है। दुष्ट लोगों का दुःख, दुर्बलता और उनका खेद और पराजय बयान करने के लिए बहुत दर्दनाक है। और जब बूढ़े होने लगते हैं तो वे और अधिक कड़वाहट से भर जाते है। आतुर, उदास और चिड़चिड़े हो जाते है।

जीवन को एक पूरी अवधि के रूप में लिया जाना चाहिए। जवानी और प्रौढ़ता बहुत जल्दी गुजर जाते है। तनाव और दबाव जीवन पर भयानक हिसाब लेता है। मगर जिसके पाप यीशु के लहू में धुले है उसके लिए गहरी अंदरूनी शान्ति है। उसमें एक आंतरिक चमक है जो अपने शब्दों और कार्यों में बाहर जाहिर होता। वह अपने आप ही एक अनोखा शोभा है।

'आप सीधे अंदर आओ, प्रभु यीशु ये मेरा हृदय है। यह सब आपका है। अब तक वह आपके लिए सख्त बन्द था। मगर अब मेरे मन के साथ साथ मेरा जीवन भी आपका है।' जब आप यीशु से ऐसा कहते हो, तब जो महान चमत्कार घटता है उसका वर्णन करना मुश्किल है। उसे मानव के मापदंड से नाप पाना कठिन है। उद्धार एक बढ़ता अनुभव है। - पहले जन्म लेना, नया जन्म, फिर बाद में बढ़ना। सामर्थ और प्रेम के बेहद खजाने खोजने, अपने वश में करने आपके सामने खुल जायेंगे।

'आह! उसकी कैसी सुन्दरता, और कैसी शोभा होगी!' परमेश्वर ने जो मेरे साथ किया है वह देखकर मुझे अकसर अश्चर्य होता है। - एक पापी आदमी जिसकी कल्पनायें और विचार पापमय है। यीशु से अलग, निश्चित ही मेरे लिए कोई आशा ना थी।

एक दफा एक सपने से मैं उठ गया था। वह सिर्फ यही थाः मैंने सपने में देखा कि मैं परमेश्वर के रास्ते से किसी तरह फिसल गया हूँ। उस विचार से ही मेरा मन विचलित हो उठा। मुझ में ना तो सुन्दरता है और ना ही अच्छाई। जो मेरे पास है वह यीशु की ओर से है। उन्होंने मेरी सहज बदसूरती, नीचता और दुष्टता को अपने पाप रहित देह पर लिया है। मेरे स्थान पर मर कर मुझे सुन्दरता दी है। यीशु की सुन्दरता सदा बनी रहने वाली सुन्दरता है।

थके-मांदे, घिसे पिटे परेशान, आनंद रहित उदासीन और दयनीय चहरे। शहरों के किसी भी उपनगरीय रेलों में, जब दफ्तर शाम को बन्द होते है तब आप उनको देख सकते हो। उनके चहरों पर खुशी का कोई नामो-निशान नहीं - सिर्फ तनाव। इस हालत में जब वे घर पहुँचते है तो वे निश्चित ही अपने इस तनाव, चिड़चिड़ेपन और उदासी से दूसरों को परेशान करते है। वास्तव में ऐसा लगता है कि उनके व्यक्तित्व में दबा हुआ मनोभावों का बम किसी भी वक्त फटने वाला है। वह सिर्फ नटखट बच्चे ही नहीं है जो जिद्दी और खुदगर्ज होते है; आदमी और भी हठीले हो सकते है। - यीशु के अधीन ना होने पर पत्थर-दिल और अड़ियल बन सकते है।

एक आदमी जिसकी संगति और उपदेश मुझे बहुत आनंद पहुंचाता है, वो मन फिराने से पहले वह एक कुख्यात डाकू था। उसका जीवन इतना सुन्दर बन गया कि कई लोग उसको सुनने के लिए आकर्षित होते थे। जीवन जो इतना दुष्ट और स्वभाव जो इतना भ्रष्ट था, फिर भी ऐसी जिन्दगी पर प्रभु यीशु ने अपनी ही सुन्दरता को दिया। अपने सुन्दर उद्धारकर्ता के बारे में बोलने के लिए जब भी वह खड़ा होता, एक विशाल समूह इकट्ठा होता, और मग्न होकर ध्यान से उसको सुनते।

'ओह! उसकी कैसी सुन्दरता और कैसी शोभा होगी!'

दक्षिण भारत के पहाड़ों पर, एक दिन मैं एक दुकान में गया था। मेरी तरफ घूरती एक भयंकर आकृति। एक बाघ की तरह मुँह खोलकर दांत निकालते हुए गुर्राती मुखाकृति। काउंटर पर उस आदमी को देखकर मैं ने कहा, 'उस आकृति से तुम किस को डराना चाहते हो?' मेरे प्रश्न से वह आदमी चौंक गया।

यह सामान्य दुःख की बात है कि आदमी दुष्टत्माओं के सामने चापलूसी करता है और काँपता है। उनको मंहगी भेंट चढ़ाकर और लम्बी तीर्थयात्रा करके उनके अनुमोदन पाना चाहता है।

मंत्र-तंत्र के ताबीज, शुभंकर चिह्न, संत कहलाये जाने वालों के अवशेष, इन सब पर आजकल बहुत पैसा खर्च किया जा रहा है। और यह सब आने वाली बुराई से बचने के लिए! भारत देश के ज्योतिषियों, धार्मिक नीम हकीमों, और स्वघोषित गुरु इस व्यापार में व्यस्त हैं। लगता है कि सारी प्रेत बाधाओं और यातनाओं के लिए हर तरह का इलाज वे प्रस्तुत करते है। मंत्र और उसके प्रतिमंत्रों की कितनी अंधकारमय दुनिया में हम जी

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBSMarg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

रहें है?

एक औरत ने मुझे लिखा था... अपने पति को उससे अलग करने के लिए किसी ने उस पर काले जादू का प्रयोग किया है। अपने पापों के लिए पश्चाताप करके वह यीशु के पास आई। हाँ, अब वह यीशु की तरफ आस लगा सकती है। अत्याचार सहने वाले और दलित और दीन लोगों के लिए यीशु कितना राहत और आशा लाते है!

जब आप यीशु के लहू के तले आते हो, तो हम कैसी अलग दुनिया में जीयेंगे। दुष्टात्मों ने आक्रमण करके, उनके द्वारा क्रूरता से सताये गये लोग कई रातें बिना नींद के गुजारते है। जब ऐसे लोग मेरे पास आते हैं तो इस कितने अद्भुत उद्धारकर्ता से मैं उनका परिचय करा सकता हूँ। जब प्रभु का भला हाथ उन पर आये, तो शैतान भाग जाता है और उन पर आराम का उदय होता है।

'आह! उसकी कैसी सुन्दरता और कैसी शोभा होगी!'

प्रिय पाठको, अभी यीशु के अधीन हो जाओ। उनको बता दो कि आपको आक्रांत कर देने वाले कुरूप जीवन के विचारों को लेकर आप और आगे जी नहीं सकते। आप चाहते हो कि उस की खूबसूरती आप पर निक्षारित हो। उसकी भलाई आप पर हावी होकर, जिन्दगी की बाकी दौड़ में आपका मार्गदर्शन करेगी।

- जोशुआ दानिएल।

सच्चा पश्चाताप... पृष्ठ 1 से

को कह रहे हैं कि यह आदमी विश्वास के द्वारा ही चंगा हुआ है। अगर आपके पास विश्वास हो, और उस विश्वास की वृद्धि होती रहे तो आपके लिए वह काफी है। पश्चात्ताप करते हुए मन फिराते समय, विश्वास के द्वारा नए जीवन का आरम्भ होता है। मगर वह जीवन एक नन्हे शिशु के जीवन के समान होता है। उसे माँ की परवरिश की ज़रूरत है। (1 पतरस 2:2) – 'नवजात शिशुओं के समान शुद्ध आत्मिक दूध के लिए लालायित रहो, जिससे कि तुम उद्धार में बढ़ते जाओ।' (यूहन्ना 6:63) – 'आत्मा ही है जो जीवन देता है, जो बातें मैं ने तुमसे कही हैं, वे आत्मा और जीवन हैं। नवजात शिशु में जीवन है। मगर पोषण मिलते-मिलते वह और जीवन प्राप्त करता है। प्रार्थना के द्वारा और वचन के पोषण से और अधिक जीवन आप में आयेगा। जब आपने नया-नया मन फिराया हो तो आपका विश्वास इतना दृढ़ नहीं होगा। विश्वास परमेश्वर की उपस्थिति में रहने के लिए आवश्यक योग्यता है। यह मजबूत विश्वास कैसे हासिल होगा? आपको पवित्र होना होगा। (यूहन्ना 1:7) – 'परन्तु यदि हम ज्योति में चलें जैसा वह स्वयं ज्योति में है, तो हमारी सहभागिता एक दूसरे से है, और उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पाप से शुद्ध करता है।' क्रूस पर बलिदान के द्वारा यीशु ने हमारे पापों का दाम चुकाया है। हमारी भावनाओं को भी पवित्र किये जाने की जरूरत है। जब आप बाईबल वचन पढ़ते जाते हो, नकारत्मक भावनायें मरती हैं और सकारत्मक भावनायें आप में शुरु होती हैं।

यह सकारात्मक भावानायें आप में सुस्थिर हो जायेंगी और आपके व्यक्तित्व में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायेंगी। आप ने मन फिराया है, मगर वहीं पर रुक मत जाना। अच्छी किताबे आप पढ़ सकते हो। मगर आपको शुद्ध करने के लिए अत्यंत उचित पुस्तक केवल बाइबल परमेश्वर का वचन है। जब हम परमेश्वर के वचन का ध्यान करते है तभी ऐसे सूक्ष्म पापों का पता चलता है। (1 यूहन्ना 2:14) – 'पितरों, मैंने तुम्हें इसलिए लिखा है, क्योंकि तुम उसको जानते हो जो आदि से है। युवकों, मैंने तुम्हें इसलिए लिखा है, क्योंकि तुम बलवान हो, और परमेश्वर का वचन तुम में बना रहता है, तथा तुमने उस दुष्ट पर विजय पा ली है।'

यूहन्ना ने मसीही जीवन का रहस्य हमें दिया है। ऐसा लगता है कि उन्होंने सिद्धता का आनंद उठाया, जो परमेश्वर देते है। जॉन वेस्ली उन में से एक है। जब हम उसका पालन करते है तो परमेश्वर का वचन हम में बना रहता है। हमारा सारा प्रयास उस अंतिम परिणाम की तरफ होना चाहिए - परमेश्वर के वचन को मानना। जब आप वचन का अध्ययन करते हो, तो याद रखकर, उसे मानना होगा। इस तरह आप सब पाप से शुद्ध किये जाओगे। अंततः परमेश्वर का वचन आपमें बना रहेगा और आप उस दुष्ट पर विजय पाओगे।

जब हम परमेश्वर की इच्छा करते हैं तो शैतान हम पर प्रबल नहीं हो पायेगा। मगर परमेश्वर की इच्छा में रहना अत्यंत कठिन है। हम मजहबी हो सकते है, मगर जब हम परमेश्वर की पूर्ण इच्छा का पालन करते हैं तभी सिद्धता हाँसिल होगी। जब आप परमेश्वर की इच्छा से हट जाते हो तभी शैतान आप पर आक्रमण कर पायेगा। मैं कुछ विषयों में परमेश्वर की इच्छा से हट गया था। और उस कारण कष्टों का सामना किया था। कुछ समय, जबकि हमारी प्रार्थनाओं का नियमित रूप से जवाब मिल रहा हो और लोग हमें परमेश्वर का जन समझकर सम्मान देने लगते है तो परमेश्वर हमारे लिए सस्ता बन जायेंगे। पवित्रीकरण की यह प्रक्रिया हम में तब तक जारी रहती है जब तक कि हमें एक शुद्ध हृदय न मिल जाए। तब बहुत आत्मायें आप के द्वारा छुई जायेंगीं। 'वह जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है सर्वदा बना रहेगा।' अपने आप को पवित्रता में और परमेश्वर के प्रेम में सिद्ध बनाते, हमें आगे बढ़ना चाहिए।

- एन.दानिय्येल।

प्रभु पर भरोसा करते

डेबोरा मीरॉफ एवं टॉम हामब्लिन कृत 'अन्डर दैर वेरी आइस - दी एस्टॉनिशिंग लाइफ ऑफ टाम हामब्लिन,' में इस कहानी का ब्यौरा है।

कैंसर से मर रहे एक गैर मसीही दोस्त को देखने एक फिलिपिनो मसीही अस्पताल गया था। दूसरे मरीजों के साथ-साथ उस दोस्त के वार्ड में ही सऊदी अरब का एक अरबी भी शामिल था। नये नियम से, बारह साल से लहू बहने का रोग से पीढ़ित स्त्री का अंश, उस मसीही ने अपने दोस्त को पढ़कर सुनाया। जब उसने सुना कि यीशु उस मार्ग से गुजर रहे हैं, भीड़ को चीरते हुए किसी ना किसी तरह उस बिमार औरत पीछे से आकर यीशु के चोगे का किनारा छुआ। उसने महसूस किया कि वह तत्काल चंगी हो गई। उद्धार और चंगाई पाने, यीशु की ओर हाथ बढ़ाने को, अपने दोस्त को प्रोत्साहित किया। मगर उस दोस्त ने विरोध किया।

'कृपया, जाने से पहले मुझे आप के लिए प्रार्थना करने दीजिए,' अंततः उसने जुनून के साथ प्रार्थना की। मगर उस आदमी ने प्रभु पर विश्वास करने से इनकार किया। वह खड़े होकर वार्ड से निकल जाने की तैयारी में था कि दूसरे बिस्तर पर पड़े एक अरबी मरीज ने अचानक उसे बुलाया।

'मैं चाहता हूँ कि कृपया आप मेरे लिए प्रार्थना करे। आपने ईसा और उस औरत के बारे में जो कहा था, मैं ने सुना।' सो उस मसीही जन ने यीशु के बारे में, और उससे बाँट कर उसके लिए प्रार्थना की।

कुछ दिनों के बाद, मसीही ने, प्रभु को पुकार ने के लिए अपने दोस्त को दुबारा अनुरोध करने के लिए हस्पताल गया था। मगर वह मर चुका था। और उस अरबी मरीज का भी बिस्तर खाली था।

वहाँ से निकल ही रहा था कि एक नर्स ने बात की और कहा कि साऊदी अरब मरीज उसके लिए एक चिट्ठी छोड़कर गया है। और नर्स ने उसे चिट्ठी सौंप दी। पत्र संदेश में प्रसन्नता पूर्वक धन्यवाद व्यक्त किया गया था। और लिखा था कि किस तरह शल्य-चिकित्सक ने अब उसके शरीर में कैंसर नहीं पाया। अपने पूरे परिवार को यह बताने अब वह घर लौट रहा है कि वह ईसा मसीह ही है जिसने उसके पापों को माँफ किया और उसको चंगा किया। 'और अब से लेकर', उसने आगे लिखा, 'मेरी सारी प्रार्थनायें उन्हीं के नाम में होंगीं।'

अब तेरी बारी है, प्रभु

परमेश्वर की ओर से प्रार्थना का उत्तर कैसे चीजों को बदल देता है निम्नलिखित कहानी है। यह कई सालों पहले, श्रीमती होवॅार्ड टेलर द्वारा लिखी गयी है, जो चीन गई एक मिशनरी थीं।

शेकीछेन में स्थित हमारे विद्यालय में अधिक संख्या में बच्चे हाजिर है। मिशनरियों की तरह ही दूसरे चीनी अध्यापक भी उस एक जरूरी चीज के प्रति उत्सुक है। सुबह प्रार्थनाओं में दिन ब दिन, दो या तीन सौ लड़के-लड़कियों का उपस्थित होना, कोई असधारण बात तो ना थी।

वह एक चीन की आध्यापिका थी, जो मिस गोल्ड है जिसने एक नन्ही मुहम्मदी लड़की को प्रार्थना करना सिखाया। उस बच्ची ने प्रभु को अपना दिल सौंप दिया और सीखने के लिए उत्सुक थी। इसलिए स्कूल के समय के बाद वह नौजवान शिक्षिका उसे एक शान्त कमरे में ले जाकर सिखाती थी। और दोनों मिलकर अपने मन के बोझों के लिए प्रार्थना करते थे।

मगर घर पर उस बच्ची के प्रति कोई हमदर्द नहीं था। जब वह प्रभु यीशु के बारे में बात करती या प्रार्थना करना चाहती थी तो उसका दादा बहुत गुस्सा करता था। एक घमण्ड मुसलमान, वह नहीं चाहता था कि उसके घर में ऐसा कुछ भी हो। उस बच्ची को पीटते थे और प्रार्थना करते दिखाई पड़ी, तो उसे धक्का भी दिया जाता था। मगर उस बच्ची ने प्रार्थना करनी नहीं छोड़ी। उसके माता-पिता और दादा-दादी भी मन फिराये यह आशा करती थी और उसे यकीन था कि प्रभु किसी ना किसी तरह रास्ता निकालेंगे।

खतरों और आफतों से भरा समय था। सिपाहियों के कुकर्म और साथ ही डाकुओं का डर था। उनके आंगन में आ ठहरे एक सिपाहियों के दल से, दादाजी ने बहुत कठिनाई झेली थी। उनको अच्छी तरह मालूम पड़ गया कि इन जैसे सिपाही वर्दी में सिर्फ डाकू ही हैं। और एक दिन जब वह नगर की शहरपनाह पर चल रहा था, उन्होंने उसी दल को लौटते देखा। और वह बहुत व्याकुल हो उठा। वे शहर की तरफ बढ़ रहे है और उनकी अगुआई करते वही अफसर था, जिसके साथ जुड़ी कई दर्दनाक घटनाओं की यादें है। क्या करना चाहिए, दादाजी को नहीं सूझा। कोई बचाव नहीं। उन उत्पीड़कों की माँगों से बचाने वाला कोई नहीं। उसे यकीनन

सत्य की परख!

'हे सब थके और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हे विश्राम दूंगा। मेरा जुआ अपने ऊपर उठा ले और मुझ से सीखो, क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूँ। और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हल्का है।' (मत्ती 11; 28-30)

'हे लोगों, हर समय उस पर भरोसा रखो, अपने हृदय उसके सामने उंडेल दो; परमेश्वर हमारा शरणस्थान है।' (भजन संहिता 62:8)

मालूम है कि वे उसकी ही जगह आ रहें है। क्योंकि पड़ोसियों की तुलना में उसके पास से निचोड़ने के लिए बहुत कुछ बाकी है।

इस परेशानी में सहायता की आशा व्यर्थ ही खोजते, अचानक दादाजी को उस नन्ही लड़की की याद आई। क्यों, बेशक, क्या वह प्रार्थना नहीं करती थी? हड़बडी से घर लोट, उसे ढूंढा। हालात की गंभीरता को समझाते उसे हिलाया और पुकारा।

तेरी जिन्दगी में कभी प्रार्थना की हो, तो अब प्रार्थना करो। वही सिपाही वापस लौट रहे हैं। शहरपनाह से मैंने उनको देखा है। तुमने कहा था ना कि परमेश्वर प्रार्थनाओं का जवाब देते है। उस कमरे में जाओ और प्रार्थना करो - बच्ची, प्रार्थना करो कि वे हमारे घर में ना आये!

ऐसा कहते काम करने के रूप में उन्होंने बच्ची को एक खाली कमरे में धकेल दिया और दरवाजा बन्द किया।

वह नन्ही बच्ची, जो सिर्फ आठ साल की थी, अकेले घुटने टेक कर प्रार्थना करने लगी। क्या वह डर गयी थी, रो रही थी अनिश्चित है? उसकी माँ जो भीतर वाले कमरे में थी, उसे प्रभु के सामने अपने दिल को उण्डेलते सुन पा रही थीः

'स्वर्गीय पिता', उसने कहा, 'मैं बहुत खुश हूँ, बुहत आभारी हूँ, क्योंकि दादाजी ने मुझे प्रार्थना करने के लिए कहा है। पहले तो अगर मैं प्रार्थना करती थी तो हमेशा या तो मुझे मारते थे या धक्का देते थे और बहुत गुस्सा होते थे। मगर अब उन्होंने ही मुझे प्रार्थना करने के लिए कहा है। हे स्वर्गीय पिता - अब तेरा मौका है! कृपया मेरे दादाजी को दिखा दो कि आप वाकई प्रार्थनाओं का उत्तर देते हो। कृपया उन सिपाहियों को यहाँ लौटने ना देना - उनको हमारे घर में आने ना देना।

और उसकी प्रार्थना प्रभु यीशु के नाम से थी।

सिपाहियों ने शहर में प्रवेश किया और उसी गलियारे में धमधमा रहे थे। दादाजी के आंगन का फाटक खुला पड़ा है - एक बहुत बड़ा सा दो दरवाजों वाला आंगन का फाटक - क्योंकी वह जानते थे कि उसे बन्द रखने से भी कोई फायदा नहीं। घुड़सवार अफ्सर, दल से आगे आये और अन्दर जाने के लिए घोडे के मूंह को फिराया। वह उसी स्थान में जाना चाहता था। और वह नन्ही बच्ची प्रार्थना कर रही थी।

'उसे हमारे घर में आने ना देना। स्वर्गीय पिता अभी तेरा मौका है। कृपया मेरे दादाजी को दिखा दो कि आप सचमुच प्रार्थनाओं का जवाब देते हो।'

क्या वह नन्ही प्रार्थना सुन ली गयी और उसे जवाब मिल गया? हाँ, सही, वहाँ कुछ हो गया था। जो किसी ने सोचा हो उन में शायद आखिरी चीज होगी। अनजानी बात है, घोड़ा अन्दर जाना ही नहीं चाहता! अफ्सर ने उसे मारा, एड़ पर लगा काँटे से चुभाया पर इन सब प्रयासों से कोई फायदा ना हुआ। आख़िरकार, चीन में प्रबल अंधविश्वासी डर से बहुत दूर नहीं रहते, वो डर उस पर हवी हो गये। अपने आदमियों की तरफ मुडकर उसने कहाः

'क्यों, इस आगन में पिशाच भरे रहे होंगे! हम उसे देख नहीं पा रहे हैं, मगर यह घोड़ा देख रहा है। एक भी अन्दर मत जाना! तुम में से एक भी वहाँ अन्दर मत जाना!'

उसने अपने घोड़े को फिराकर शहर के किसी और भाग में चला गया।

उस घोड़े ने क्या देखा है या किस से डरा है, हमें नहीं पता। मगर हम जरूर जानते है कि बहुत पहले बिलाम की गधी ने क्या देखा था, जब वो रास्ते से हटा था। और हम यह भी जानते है कि प्रभु को अब भी वैसा करना उतना ही आसान है जैसा कि उन दिनों उन्होंने अपने एक स्वर्गीदूत को भेजा जिसके हाथ में एक तलवार थी। उस शहर में स्थित मिशनरियों से हमें यह भी मालूम पड़ा कि दादाजी अगले ही दिन मिशन स्थान पर आये। और जब उनका मिलना हुआ था, उस घमण्डी वृद्ध मुहम्मदी की आखों में आँसू थे।

'सोचना', उन्होंने कहा, 'ज़रा सोचना कि इस पूरे समय, मेरी पोती सही थी और मैं गलत था! उस तरह प्रार्थना का जवाब देने वाले परमेश्वर के बारे में मुझे भी सिखाओ। मुझे प्रार्थना करना सिखाओ।'

आग से निकाली जलती लकड़ी

सन 1709 में, एपवर्थ में स्थित, वेस्ली परिवार का घर, रेक्टरी - पैरिश के मुख्याधिष्ठक के घर में आग लग गई थी।

वह जॉन वेस्ली के लिए एक दैविक बचाव का अवसर था। जॉन वेस्ली अपने माता-पिता के लिए पंद्रहवा बच्चा था। उसके पिता जो पादरी हैं, उन्होंने उसे आग से बचाने की बहुत कोशिश की, मगर आग की लपटों से हताश हो गए। उसे हमेशा के लिए खो दिया समझकर अत्यंत व्यथा में थे। जब की वह पादरी बाहर दालान पर घुटनों के बल पर गिरकर अपने छः साल के लड़के, जिसे यकीनन मरा समझा उसकी आत्मा को परमेश्वर के हाथों सौंप दिया। मगर दया से भरे पड़ोसियों ने साथ मिलकर एक पिरामिड के स्वरूप एक के ऊपर एक चढ़कर, उस लड़के को बचाने का साधन बने। मगर जॉन के लिए वह प्रार्थना, एक अनोखे और उन्नत कार्य पर, एक दैविक मोहर, जैसी दिखती है, जिसके लिए उसे अद्भुत तरीके से संरक्षित किया गया।

उसने आज्ञा दी कि उसकी समाधि - स्तंभ पर ऐसा अंकित करेः 'आग से निकाली गई जलती लकड़ी।' परमेश्वर का भय माननेवाली जॉन की माता, सुसन्ना वेस्ली ने इस बचाव में उतना ही चमत्कार देखा। जॉन की अपनी महान नियति के लिए, विश्वास को बढ़ावा दिया। और अपनी बडी उम्मीदों को प्रोत्साहन दिया। 'प्रभु की कृपा के बदले मैं उसको क्या

अर्पित करूँ?' यह छोटा सी तुच्छ स्तुति जो मैं अर्पित कर सकती, वह अल्प और नीच सा ही चढ़ावा है। मगर प्रभु, मसीह के खातिर उसे कबूल कर और उस अर्पण के अभाव को माफ कर। मैं अपने आप को समर्पण करूँ, और वह सब कुछ जो आपने मुझे दिया है; और मैं संकल्प करूँ - ओह, मुझे ऐसा करने की अनुग्रह दो! - कि बची अपनी पूरी जिन्दगी तेरी सेवा के लिए अर्पण करूं। और खास कर इस बच्चे की आत्मा के प्रति विशेष रूप से और अधिक सावधान रहने का इरादा करती हूँ। इससे पहले से भी अधिक सावधान, इसके प्राति आप ने जो दयालू जीवन प्रदान किया है। मैंने ठान लिया कि आपका सच्चा धर्म और गुण के सिद्धांतों को उसके मन में बठाने की कोशिश करूंगी। प्रभु, इमानदारी से और विवेक पूर्वक ऐसा करने का अनुग्रह मुझे प्रदान करो, और मेरे प्रयासों को अच्छी सफलता से अशीषित करो।' परमेश्वर ने उसकी प्रार्थनाओं का जवाब दिया।

आग की दुर्घटना की वह रात, उत्पीड़ित पादरी को अंततः जब एहसास हो गया कि उसकी पत्नी और सारे बच्चे सुरक्षित हैं, तो बगीचे में उन सब को अपने चारो तरफ इकट्ठा किया। लोगों ने उसे बताया कि सारी संपत्ति जलकर नष्ट हो गई। 'मुझे क्या परवाह,' पादरी ने कहा, 'मेरी प्यारी पत्नी और मेरे सारे बच्चे मेरे पास हैं। यही मेरे लिए काफी संपत्ति है। आओ मेरे पड़ोसियों, मिलकर हम परमेश्वर को धन्य कहें।'

संभवतः उस पादरी को, अपनी पुस्तकशाला का जल जाना, सबसे बड़ा नुकसान था। उस आग से केवल दो ही राख सा बने कागज के टुकडे बच गये। उनमें से एक सैमुएल वेस्ली द्वारा लिखित भजन की प्रति, 'बिहोल्ड दा सेवियर ऑफ मेन काइंड'। और दूसरा था जो उसे अत्यंत प्यारा पॉलीग्लॉट बाइबल की लगभग जली हुई प्रति जिसमें एक ही व्याक्य पढ़ने योग्य बचाः 'जो कुछ तेरा है उसे बेचकर, अपना क्रूस उठा, और आकर मेरे पीछे चल।'

ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से शिक्षित, जॉन - वह लड़का जो आग से बचाया गया था – वह, उसके भाई चार्ल्स द्वारा संगठित ऑक्सफोर्ड ग्रूप जो 'दी होली क्लब' कहलाता था, उसका नेता बना। उनको मेथोडिस्ट करार दिया गए क्योंकि वचन का अध्ययन और ध्यान के प्रति उनका एक व्यवस्थित दृष्टिकोण था।

सन 1735 में जॉन अमेरिका जाने के लिए रवाना हुआ मगर 1738 में, अमेरिकी मूल निवासियों के बीच सेवा करने के असफल उद्यम के बाद इंगलैण्ड वापस लौट आया। उन्होंने लिखा थाः 'मैं तो उन मूलनिवासियों को परिवर्तित करने गया था, मगर ओह, मुझे कौन बदलेगा करेगा?' उस यात्रा के दौरान कुछ मोरावियन मसीहियों ने उस पर एक प्रभावशाली छाप छोड़ी।

24 मई 1738, ऑल्डरगेट स्ट्रीट में आयोजित एक सभा में, जॉन ने अपने दिल में अजीब सी गर्मजोशी महसूस की। वह एक ऐसा अनुभव था कि, उन्होंने कहा, 'ऐसे आग लग गई, जो मुझे विश्वास है कभी नहीं बुझेगी।'

उन्होंने अपनी डेयरी में लिखाः शाम को मैं ऑल्डरगेट स्ट्रीट में स्थित एक समाज में बहुत अनिच्छा से गया था। वहाँ रोमियों के लिए लिखी पत्री पर लूथर द्वारा लिखित प्रस्तावना को कोई पढ़ रहा था। नौ बजने से कुछ पंद्रह मिनट पहले, मसीह पर विश्वास करने के द्वारा परमेश्वर किस तरह मन में बदलाव लाते है उसका वह वर्णन कर रहा था। मैंने अपने दिल में एक अजीब सी गरमजोशी महसूस की। मैंने महसूस किया कि मैं जरूर मसीह पर विश्वास करता हूँ, उद्धार पाने के लिए सिर्फ मसीह पर, और मुझे एक आश्वासन दिया गया कि उन्होंने मेरे पापों को दूर किया है, मेरे ही पापों को और मुझे पाप और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतन्त्र कर दिया है।'

जॉन वेस्ली के दिल में लगी आग को परमेश्वर ने बुझने नहीं दिया। उन्होंने दौरों से भरे भ्रमणकारी सुसमाचार-प्रचार की सेवा प्रारंभ की है। और कुछ 2,50,000 मील घोड़े पर सवार, पूरे ब्रिटन और आयरलैंड में अनुमानित 40,000 उपदेशों को देकर प्रचार किया।

- विल्यम होरटन फास्टर, सुसन्ना वेस्ली देखें।